

प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष और सामंती व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का चित्रण

¹अनिल कुमार, ²डॉ. मिनेश जैन

¹शोधार्थी, ²पर्यवेक्षक

¹⁻²विभाग: हिन्दी, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार

प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष और सामंती व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का चित्रण उनके सामाजिक यथार्थवाद की गहरी समझ को दर्शाता है। उनके उपन्यास कर्मभूमि, गबन, निर्मला और गोदान भारतीय समाज में व्याप्त असमानताओं, शोषण और संघर्ष को सजीव रूप से प्रस्तुत करते हैं। कर्मभूमि में गांधीवादी विचारधारा और ग्रामोद्धार के कार्यों में अमरकान्त का संघर्ष, गबन में मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक समस्याओं और सामाजिक दबावों का चित्रण, निर्मला में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की त्रासदी, और गोदान में किसान होरी का संघर्ष, सभी में सामंती व्यवस्था और शोषण के खिलाफ प्रतिरोध की प्रवृत्ति नजर आती है। प्रेमचंद ने इन उपन्यासों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त असंतोष और अन्याय को उजागर किया और समाज में बदलाव के लिए एक मजबूत संदेश दिया।

मुख्य शब्द: वर्ग संघर्ष, सामंती व्यवस्था, सामाजिक यथार्थवाद, प्रेमचंद, कर्मभूमि, गबन, गोदान, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, किसान जीवन, गांधीवादी विचारधारा, शोषण।

भूमिका

प्रेमचंद, हिंदी साहित्य के महान रचनाकार, ने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से चित्रित किया। उनका लेखन विशेष रूप से सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित था, जिसमें उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों, जैसे किसानों, मजदूरों और महिलाओं के संघर्षों को प्रमुखता से उभारा। प्रेमचंद का लेखन समाज में व्याप्त असमानता, शोषण और भ्रष्टाचार को उजागर करने में सहायक रहा। उनके उपन्यासों में विशेष रूप से वर्ग संघर्ष और सामंती व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध को प्रमुखता दी गई है। कर्मभूमि में गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित एक युवा का संघर्ष, गबन में समाज के मध्यवर्गीय परिवारों के आर्थिक और सामाजिक संघर्षों का चित्रण, निर्मला में दहेज प्रथा और अनमेल विवाह के कष्ट, और गोदान में किसानों के जीवन के संघर्ष को दर्शाया गया है। इन उपन्यासों में प्रेमचंद ने केवल अपने पात्रों के संघर्षों को नहीं, बल्कि समग्र भारतीय समाज की सच्चाई को उजागर किया है। उनके लेखन में भारतीय समाज की जटिलताएँ और संघर्ष सजीव हो उठते हैं, जो आज भी सामाजिक मुद्दों पर विचार करने का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

प्रेमचंद का यह साहित्य न केवल उनके समय की समस्याओं की गहरी छानबीन करता है, बल्कि आज भी उन समस्याओं के समाधान की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जो समाज में असमानता और शोषण के कारण उत्पन्न होती हैं। उनके उपन्यासों में जीवन की कठिनाइयाँ, वर्ग संघर्ष, और सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक स्पष्ट और संघर्षशील आवाज मिलती है, जो समाज को बदलाव की दिशा में प्रेरित करती है।

कर्मभूमि (मैदाने अमल)

पांडुलिपि के उपलब्ध अंश के आधार पर इसका लेखन 16 अप्रैल, 1931 को आरम्भ हुआ और प्रकाशन अगस्त 1932 में हुआ। प्रेमचंद जी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में कर्मभूमि है। इसकी संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है—

बनारस के सेठ अमरकान्त का पुत्र अमरकान्त जिसकी माँ की उसके बचपन में ही मृत्यु हो जाती है, गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित युवक है। उसकी अपनी पत्नी सुखदा तथा पिता से इस कारण नहीं पट पाती कि

उनको उसके ग्रामोद्धार के कार्यों में रुचि लेना अच्छा नहीं लगता था। सुखदा को अपनी विधवा माँ की विशाल सम्पत्ति मिलने की आशा थी। इस कारण उसका मन और भी बढ़ा रहता है। अमरकान्त, सलीम और शान्ति कुमार आदि मित्रों के साथ जब-तब ग्राम-सेवा के लिए जाने लगता है। एक ऐसे ही अवसर पर वे एक ग्रामीण महिला (मुन्नी) की गोरों के अत्याचार से रक्षा करता है और इसका परिणाम यह होता है कि वह राजनीतिक कार्यों में अधिक भाग लेने लगता है। अपनी पत्नी के आग्रह के कारण वह कुछ दिनों तक राजनीतिक कार्यों से विमुख होकर पिता की दुकान पर बैठने लगता है। यहाँ उसकी अपने पिता से इस बात पर ठन जाती है कि वह चोरी का माल खरीदने से इनकार कर देता है।

मुन्नी विक्षिप्त-सी हो गयी थी। एक दिन उसने एक अंग्रेज की छुरी से हत्या कर दी तो उस पर मुकदमा चलाया गया, तब अमरकान्त अपने मित्रों के साथ उसकी ज़ोरों से पैरवी की जिससे उसे बरी कर दिया गया। दूसरी ओर जब अमरकान्त को इस बात का पता चला कि उसके पिता एक मुसलमान बुढ़िया को पाँच रुपये माहवार देते हैं तो उसके घर गया, जहाँ उसकी मुलाकात उस बुढ़िया की पोती सकीना से हुआ। एक दिन सकीना ने अपनी एकमात्र धोती सूखने के लिए डाल रखी थी। यह देखकर अमरकान्त ने उसे चार साड़ी देनी चाही, पर सकीना ने नहीं लिया और उन्हें अपने घर आने से भी मना कर दिया। दूसरी ओर सकीना के विवाह की बातचीत चली जिसे अमरकान्त ने ही कुछ दिनों के लिए आगे बढ़ा दिया, क्योंकि वह स्वयं सकीना की ओर आकृष्ट होता जा रहा था।

अमरकान्त की अपनी पत्नी सुखदा की ओर अरुचि बढ़ती जा रही थी और अन्ततः वह एक चमारों के गाँव में रहकर ग्राम-सुधार करने लगा। यही वजह है कि वह अपने पिता से अलग रहने लगा था। मुन्नी भी इसी चमारों की बस्ती में रहती थी तथा वहाँ एक पाठशाला खोलकर अपनी जीविकोपार्जन का साधन कर लिया था। वहाँ उसने चमारों में मरी हुई गाय का मांस खाने की कुप्रथा को छुड़ाने में भी सफलता प्राप्त की।

लाला समरकान्त अपने ठाकुरद्वारे में एक ब्रह्मचारी से कथा कहलवाते थे। उन्हें जब यह ज्ञात हुआ कि कथा सुनने के लिए कुछ अच्छे भी आते हैं तो वे बिगड़ उठे और अच्छों के कथा सुनने पर पाबन्दी लगा दी गयी। अच्छों ने इस पाबन्दी की चिन्ता न की, अन्ततः उन्हें रोकने के लिए एक दिन तो गोली भी चलानी पड़ गयी। गोली चलने से भयभीत होकर भागते अच्छों को सुखदा सामने आकर समझाने लगी कि पीछे मत हटो। यह दृश्य देखकर समरकान्त को अच्छों को मन्दिर प्रवेश की स्वीकृति देने के लिए विवश होना पड़ा।

अमरकान्त का मित्र सलीम आई0सी0एस0 करके उसी इलाके में नियुक्त हुआ, जहाँ अमरकान्त ग्रामोद्धार के कार्यों में लगा हुआ था। जिला मजिस्ट्रेट के आदेश पर उसने लगानबन्दी का आन्दोलन चलाने वाले अमरकान्त को गिरफ्तार भी किया, किन्तु उसने किसानों की हालत की ऐसी रिपोर्ट प्रस्तुत की कि उसे बर्खास्त कर दिया गया। सलीम अब किसानों के आन्दोलन में भाग लेने लगा था। अतः उसे भी गिरफ्तार करके उसी जेल में भेज दिया गया, जहाँ अमरकान्त था। अन्ततय सरकार झुक गयी और इस आदेश के साथ कि उस इलाके के लगान के मामले पर पाँच आदमियों की कमेटी विचार करेगी जिसके दो मेम्बर अमरकान्त और सलीम होंगे, उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचन्द यद्यपि अच्छोंद्वारा की समस्या से अधिक उलझे हैं, जिसके उन्होंने ग्रामीण और नागरिक जीवन में भिन्न-भिन्न रूप प्रस्तुत किये हैं, तथापि अन्त में सामाजिक समस्याओं की ओर भी उन्होंने दृष्टिपात किया है। इनमें से प्रथम है— भारत की शिक्षा-प्रणाली जो एक प्रकार का व्यवसाय बन चुकी है और उसे प्राप्त करने वालों में देश-प्रेम, सेवा-भाव, भातृस्नेह, सदाचार आदि गुणों का विकास न होकर समाज को लूटने की भावना का प्रादुर्भाव होता है।

गबन

यह सन् 1931 में सरस्वती प्रेस से प्रकाशित प्रेमचन्द की अति विशिष्ट रचना है। 'गबन का कथानक इस प्रकार है कचहरी में नौकरी करते हुए भी रिश्वत लेना अधर्म समझने वाले मुंशी दयानाथ अपने पुत्र रमानाथ को मैट्रिक से अधिक नहीं पढ़ा सके। रमानाथ का विवाह जमींदार मुख्तार दीनदयाल की सुपुत्री जालपा के साथ हो जाता है जिसके पिता का वेतन तो मात्र पाँच रुपये था किन्तु रिश्वत लेने के कारण जालपा का लालन-पालन बड़े वैभव में हुआ था। जालपा जिसके हृदय में विवाह के अवसर पर चन्द्रहार की लालसा बचपन से ही बलवती थी। किन्तु दयानाथ द्वारा 3000 के आभूषणों के बावजूद भी उसकी चन्द्रहार की लालसा पूरी न हो सकी।

“जालपा अत्यधिक रूपवती थी, जिससे देखते ही रमानाथ उसके प्रति अत्यधिक आसक्त हो उठा। चन्द्रहार न मिलने के कारण जालपा ने अन्य आभूषणों का भी परित्याग कर दिया था कि जब तक उसके लिए चन्द्रहार नहीं आता, वह अन्य आभूषण भी ग्रहण नहीं करेगी। इसके विपरीत उसके ससुर सर्राफे के तकाजे के कारण उसके लिए बनवाये अन्य आभूषणों को भी बेचना चाहते थे। जालपा से आभूषण लेने का दायित्व रमानाथ पर सौंपा गया। यद्यपि रमानाथ तो जालपा के सम्मुख यह डींग हाक चुका था कि हमारे पचासों हजार रुपये बैंक में जमा है तथा जमींदारों से भी हमें पर्याप्त आय होती है। अतः वह इस संकोच में ग्रस्त होकर जालपा के पूरे आभूषणों का डिब्बा चुराकर अपने पिता को सौंप आया।”

कहाँ तो जालपा चन्द्रहार के लिए रूठी थी, कहाँ अब उसे सम्पूर्ण गहनों के लिए मानसिक आघात पहुँचा। कुछ दिनों तक तो वह रोगियों की भाँति बिस्तर पर पड़ी रही, फिर वह अपने मायके जाने को प्रस्तुत हुए। उसे अपने सास-ससुर पर क्रोध आ रहा था कि इतना धन होने के बावजूद वे उसके लिए नये गहने नहीं बनवा रहे हैं। साथ ही अपने पति रमानाथ के प्रति यह सोचकर क्रोध से रूठी थी कि वे भी अपने माता-पिता पर नये आभूषण बनवाने का दबाव नहीं लगा रहा है। परन्तु जब रमानाथ के समझाने पर कि वह नौकरी द्वारा अपने वेतन से उसके लिए नये गहने बनवा देगा, तब जाकर जालपा किसी प्रकार अपने हठ को त्याग सकी।

रमानाथ को रमेश बाबू के सहयोग से म्युनिसिपल बोर्ड में 30 रु० मासिक वेतन की मुहरिरी मिल गयी। उसका चुंगी लेने का कार्य ऐसा था कि उसमें ऊपर की आमदनी भी अच्छी हो जाती थी, किन्तु शौकीन-मिजाज होने के कारण रमानाथ के हाथ में पैसा ठहर न पाता था। आभूषण न होने का तर्क देकर जन्माष्टमी का उत्सव न देखने जाने वाली जालपा के लिए रमेश बाबू के माध्यम से उधार आभूषण लाने के उद्देश्य से गया भी, किन्तु रमेश बाबू ने स्त्रियों की आभूषण-प्रियता की इतनी निन्दा की, कि रमानाथ निराश होकर लौट आये। किन्तु वह अपने मन पर अधिक समय तक संयम न रख सका, क्योंकि जब उसने जालपा द्वारा अपने सखियों को लिखा पत्र चोरी से पढ़ लिया तो उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानों आभूषणों के अभाव में जालपा का प्राणान्त ही हो जायेगा। वह उसी समय सर्राफे गया और 950 रुपये के दो आभूषण खरीद लाया—एक जड़ाऊ चन्द्रहार तथा एक जोड़ी कंगन, जिसमें उस पर 650 रु० का उधार रह गया। एक दलाल ने घर पर ही आभूषण लाकर मामला ऐसा उलझा दिया कि उसे 700 रु० के कंगन और कानों के रिंग भी खरीदने पड़ गये।

आभूषण आ जाने पर अब जालपा पहले जैसी न रह गई। अब उसमें अपने आभूषणों के प्रदर्शनी करने का जो धुन सवार था कि कहना ही क्या। वहीं रमानाथ भी अपनी सुन्दर पत्नी की सुन्दरता को लेकर पार्को तथा सिनेमा हाल के चक्कर लगाने लगा। इस प्रकार वे एडवोकेट इन्द्रभूषण और उसकी पत्नी रतन के सम्पर्क में आये। रतन जालपा के कंगनों पर रीझ उठी, उसने रमानाथ को 600 रुपये देकर वैसे ही कंगन बनवाने को कहा। रमानाथ ने जब सर्राफ को 600 रु० दिये तो उसने पिछला हिसाब बताकर इन पैसों को रख लिया और कंगन बनवाने से साफ इनकार कर दिया।

यद्यपि कुछ दिनों तक रमानाथ ने रतन को झॉसा देना चाहा, किन्तु अन्ततः अपने रुपये . रतन द्वारा माँगे जाने पर उसने आफिस से 800 रुपये लाकर रतन को तसल्ली देना चाहा, किन्तु जालपा ने ये रुपये रतन को वापस कर उसकी सारी योजना पर पानी फेर दिया। उसने किसी तरह 500 रुपये की व्यवस्था तो कर ली, किन्तु 300 रुपये अब भी शेष थे। अब उसे आफिस के रुपये गबन करने के आरोप में जेल का भय सताने लगा। उसने पत्र द्वारा जालपा को सच्चाई बतायी, साथ ही जालपा के आभूषण गिरवी रखकर रुपया जमा करने की बात कही। परन्तु जब जालपा ने उस पत्र को पढ़ना आरम्भ किया तो उसे आत्मग्लानि का अनुभव हुआ और वह घर छोड़कर भाग खड़ा हुआ और कलकत्ता जा पहुँचा।

वहाँ रमानाथ देवीदीन नामक स्वदेश-प्रेमी खटिक के यहाँ रहने लगा। उसे भय था कि गबन के आरोप में पुलिस उसकी खोज में होगी, इसलिए जालपा द्वारा निकलवाये इशतहार को उसने पुलिस का जाल समझा। उधर जालपा ने वस्तु-स्थिति को जानकर अपना चन्द्रहार बेचकर दफ्तर के रुपये जमा कर दिये थे। उधर रमानाथ ने कलकत्ता में चाय की एक दुकान खोल ली जिस पर अधिकतर देवीदीन ही बैठता था, क्योंकि रमानाथ पुलिस के भय से कम ही निकलता था। उसने एक शतरंज का नक्शा हल करके 50 रुपये का पुरस्कार जीता था जिसको जालपा ने ही छपवाया था। उसे रमानाथ का पता मिल गया। किन्तु उसके कलकत्ता आने से पूर्व पुलिस ने उसे क्रान्तिकारियों पर चलाये जाने वाले मुकदमें में मुखबिरी के लिए तैयार कर लिया।

जालपा ने कलकत्ता पहुँचकर और देवीदीन से वस्तुस्थिति समझकर स्वपति के देश-प्रेमी क्रान्तिकारियों के विरुद्ध झूठी गवाही देने से रोकने के लिए भरसक प्रयास किया। उसे एक पत्र देकर यह सूचना पहुँचा दी गयी कि उसके दफ्तर के रुपये जमाकर दिये गये हैं। इस प्रकार उस पर किसी प्रकार का आरोप नहीं है। यह सच था कि रमानाथ गबन से मुक्ति पाने के लिए ही मुखबिर बना था। अन्ततः उसे अपना बयान बदलने का निश्चय किया, परन्तु पुलिस के समक्ष उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। परिणाम यह हुआ कि दिनेश नामक क्रान्तिकारी को फाँसी तथा अन्य क्रान्तिकारियों को 5 से 10 साल की कैद हुई।

उधर जालपा पति द्वारा किये पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए दिनेश के परिवार की सेवासुश्रूषा करने लगी। मुकदमें की तसदीक शेष हो, पर पुलिस ने रमानाथ का ध्यान जालपा की ओर से हटाकर सुरा और सुन्दरी की ओर लगा दिया। जोहरा नामक वेश्या ने उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। यहाँ तक कि रमानाथ उससे विवाह करने का विचार करने लगा। उन्हीं दिनों उसने सैर पर जाते हुए जालपा को दयनीय अवस्था में देखा। जोहरा द्वारा बताये जाने पर उसका अन्तर्मन रो उठा कि जालपा उसके द्वारा किये गये पाप का प्रायश्चित्त कर रही है। रमानाथ ने जज को जाकर सारी सच्चाई से अवगत कराया। इस प्रकार अन्य क्रान्तिकारी निरापराध होकर छूट गये। जालपा, रमानाथ, देवीदीन, जोहरा और रतन आदि पात्र एक गाँव में जाकर रहने लगे।

इस प्रकार इस मूल कथा के साथ अनमेल विवाह के कारण असमय वैधव्य को प्राप्त हुई रतन की कथा भी है। रतन के प्रति इन्द्रभूषण जिन्होंने प्रायः वृद्धावस्था में विवाह किया था, शीघ्र ही काल-कवलित हो जाते हैं और चाहते हुए भी रतन के नाम वसीयत नहीं कर पाते। उनका अपने भाई से विधिवत बँटवारा नहीं हुआ था, अतः तत्कालीन नियम के अनुसार इन्द्रभूषण की सम्पत्ति पर उसके भतीजे ने अधिकार कर लिया। निराश्रित रतन निराश होकर जालपा और रमानाथ के यहाँ आकर रहने लगती है और बीमारी के कारण शीघ्र ही चल बसती है। उनके समीप रहने वाली जोहरा की भी एक बाढ़ग्रस्त नारी को बचाने में मृत्यु हो जाती है।

अभिप्राय यह है कि प्रेमचन्द उपन्यास के अन्त में यह निर्दिष्ट करने का लोभ संवरण नहीं कर पाये हैं कि किस पात्र का क्या हुआ? इसी उद्देश्य से उन्होंने प्रयाग के समीप के एक गाँव में देवीदीन, जग्गो, जोहरा, रतन, दयानाथ, जालपा और रमानाथ को लाकर एकत्र कर दिया है और इन पात्रों में से रतन और जोहरा की मृत्यु कराकर अपने दायित्व से छुटकारा पाने का सन्तोष कर लिया है।

निर्मला

डॉ० गोपाल राय के अनुसार यह उपन्यास चौद पत्र के नवम्बर 1925 से नवम्बर 1926 तक के अंकों में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था तथा जनवरी 1927 में पुस्तकाकार में प्रकाशित हुआ था। इसका कथानक संक्षेप में इस प्रकार है—

उदयभानु लाल अपनी ज्येष्ठ कन्या निर्मला के विवाह में अपनी सामर्थ्य से बढ़कर दहेज देने को तत्पर थे, क्योंकि वे वर-पक्ष की सरलता पर रीझे हुए थे, परन्तु उनकी पत्नी कल्याणी अन्य बच्चों के भरण-पोषण का तर्क देकर उनका विरोध किया करती थी। इस बात को लेकर पतिपत्नी में कहा-सुनी हो गई। उदयभानु लाल ने पत्नी को खिझाने के लिए गंगा में डूबकर आत्महत्या कर लेने का स्वाँग रचना चाहा, किन्तु होनी को कुछ और ही मंजूर था। मार्ग में मतई नामक बदमाश ने पुरानी शत्रुता के कारण उनका वास्तव में ही काम तमाम कर दिया।

उदयभानु लाल की असमय मृत्यु से घर पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। निर्मला का विवाह उचित धन (दहेज) न मिल पाने के कारण टूट गया। यद्यपि उदयभानु लाल की विधवा स्त्री कल्याणी का करुण पत्र पढ़कर लड़के की माता तो इस सम्बन्ध के पक्ष में थी, किन्तु अपने पति और उसके पुत्र के समक्ष उसकी एक भी न चल सकी, जो योग्य लड़की की बजाय दहेज ही अहम मानते थे।

इस प्रकार दहेज की लाचारी के कारण निर्मला का विवाह अपने से दुगुनी उम्र के तोताराम से करना पड़ा, जिनका पहले ही विवाह हो चुका था। उससे उनको तीन पुत्र थे। बड़ा बेटा मंशाराम, निर्मला का हम उम्र (सोलह वर्ष) का था। निर्मला के मन में तोताराम के प्रति प्रेम-भावना जाग्रत ही नहीं हो पाती थी, क्योंकि कुछ समय पूर्व तक तो इस उम्र का व्यक्ति उसका पिता हुआ करता था जिसके सम्मुख वह बड़े संकोचपूर्वक रहती थी। वस्त्राभूषणों से सम्पन्न होने पर भी उसे वह मानसिक सुख-शान्ति का अनुभव नहीं होता था, जो नवविवाहित स्त्रियों को होनी चाहिए। उस पर विधवा ननद, जो अपने मायके में रहती थी, उसका और भी नाक में दम रहता था। वह तोताराम के पुत्रों को निर्मला के पास फटकने तक नहीं देती थी और उनसे उसकी झूठी-सच्ची शिकायतें भी करती रहती थी।

मुंशी तोताराम के हस्तक्षेप करने पर उसने उनके पुत्रों को निर्मला से मिलने-जुलने दिया। निर्मला उनसे स्नेह करने लगी। मंशाराम से अंग्रेजी सीखना शुरू की। उधर तोताराम अपनी पत्नी का प्रेम जीतने के लिए अपनी वेशभूषा और बातचीत का रंग-ढंग इतना बदल लिया था और साथ ही अपनी बहादुरी के ऐसे मिथ्या किस्से सुनाते थे कि निर्मला को उनका मस्तिष्क विकृत होने का संकेत होने लगा। तोताराम ने जब यह अनुभव किया कि मित्रों के बताये नुस्खों का निर्मला पर अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ रहा है, तो उनके मन में यह शंका घर कर गई कि कदाचित् वह मंशाराम की ओर आकृष्ट है।

हृदय में सन्देह पनपते ही तोताराम ने अपने बड़े लड़के मंशाराम को बोर्डिंग हाउस में भर्ती करा दिया। मंशाराम और निर्मला तोताराम के इस अकारण उत्पन्न रहस्य को भाँप गये। मंशाराम इस सन्देह से ग्लानि के क्षोभ में घुलता चला गया तथा अन्ततः क्षय रोगग्रस्त हो गया। तोताराम द्वारा उसे मन मारकर घर लाने का आग्रह करने पर भी वह सन्देहास्पद वातावरण में घर नहीं आया, अतः मंशाराम अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। तोताराम को यह भी सहन नहीं था कि निर्मला मंशाराम को देखने के लिए अस्पताल जाये, अतः जब वह उसकी अवज्ञा करती हुई अस्पताल जा पहुँची तो पति-पत्नी में वहीं कहा-सुनी हो गई। इस झगड़े से मंशाराम की आत्मा रो पड़ी और उसे करुणाविगलित कण्ठ से ये शब्द निकल पड़े।

“अम्मा जी इस अभागे के लिए आपको व्यर्थ इतना कष्ट हुआ। मैं आपका स्नेह कभी न भूलूँगा। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरा पूर्व जन्म आपके गर्भ से हो, जिससे मैं आपके ऋण से उऋण हो सकूँ.....। आपकी

उम्र मुझसे ज्यादा न हो, लेकिन आप मेरी माता के स्थान पर थीं और मैंने आपके सदैव इसी दृष्टि से देखा है।”

मंशाराम के इन उद्गारों से तोताराम का सन्देह तो दूर हो गया किन्तु अब तक उसकी दशा इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसे जीवित न बचाया जा सका।

मंशाराम का इलाज करने वाले डाक्टर भुवन मोहन वही व्यक्ति थे जिससे निर्मला की सगाई होकर टूट गई थी। यह रहस्य खुलने पर भुवन मोहन को ऐसी आत्मग्लानि हुई कि उन्होंने अपने भाई का विवाह निर्मला की छोटी बहन कृष्णा से करा दिया।

मुंशी तोताराम खिन्नता और शोक के कारण अपने मुकदमों की पैरवी भली प्रकार नहीं कर पाते थे जिससे उनकी आय निरन्तर घटती गई। अन्ततः उनका मकान नीलाम हो गया। एक दिन उनका मझोला पुत्र जियाराम निर्मला के आभूषणों का डिब्बा चुरा ले गया। चोरी पकड़ी जाने पर उसने लज्जावश आत्महत्या कर ली। उनका छोटा लड़का भी इस बात से चिढ़कर घर से भाग गया कि निर्मला उससे सब्जी आदि बाजारू चीजें क्यों मँगवाती है, जो उसकी दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा के विरुद्ध था। इस हेतु निर्मला पर दोषारोपण करते हुए तोताराम भी उसकी खोज में घर से निकल पड़े।

निर्मला जब एक दिन भुवन मोहन के घर गई तो वहाँ उसकी पत्नी सुधा उपस्थित न थीं। एकान्त होकर जब उन्होंने अपने विगत कृत्य के लिए क्षमा याचना करते हुए उससे काम-तुष्टि का निवेदन किया तो निर्मला उन्हें कड़ी फटकार लगाकर क्रोधवश में घर की ओर चल पड़ी। मार्ग में मिली सुधा को जब यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उसने अपने पति को ऐसा आड़े हाथों लिया कि भुवन मोहन को आत्महत्या करनी पड़ी। स्वयं को कुलक्षणी समझती हुई निर्मला भी घुल-घुलकर चल बसी। उसके अन्तिम संस्कार के विषय में यह प्रश्न उठ ही रहा था कि उसे आग कौन लगायेगा, तभी तोताराम वापस आ पहुँचे।

निर्मला प्रेमचन्द के लघु कलेवर के उपन्यासों में से है और कथानक योजना की दृष्टि से पूर्णतया सुसंगठित है। निर्मला और तोताराम के चरित्रांकन में भी मुंशी जी ने अपनी सूझ-बूझ का अच्छा परिचय दिया है। प्रतिपाद्य की दृष्टि से वे अपनी ओर से कुछ नहीं कहते, किन्तु स्वतः घटनाएँ ही बोलती हुई पाठकों के हृदय में यह भाव जागृत कर देती हैं कि अनमेल विवाहों का कितना भयावह परिणाम निकलता है।

गोदान

गोदान प्रेमचन्द का अन्तिम और सबसे अधिक प्रसिद्ध उपन्यास है। यह सन् 1936 ई० में प्रकाशित हुआ। हिन्दी उपन्यासों में गोदान कृषक-जीवन का महाकाव्य माना जाता है। उनके कुछ अन्य उपन्यासों की भाँति इस उपन्यास में भी दो कथानक हैं एक तो प्रधान और ग्रामीण जीवन से सम्बद्ध और दूसरा प्रासंगिक तथा नागरिक जीवन से सम्बद्ध।

होरी बेलारी गाँव (अवध प्रान्त) का रहने वाला एक किसान है। उसकी पत्नी धनिया, पुत्र गोबर और सोना तथा रूपा दो पुत्रियाँ हैं। शोभा और हीरा उसके दो भाई हैं।

होरी अपने कठिन परिश्रम द्वारा जीविकोपार्जन करता है और परिवार की प्रतिष्ठा बनाये रखता है। भाइयों में बँटवारा हो जाने के पश्चात् आर्थिक स्थिति विषम हो जाती है। ऐसी स्थिति में होरी सेमरी गाँव में रहने वाले राय साहब, अमरपाल सिंह (जमींदार) को प्रायः सलाम करने चला जाता है और अपनी व्यावहारिक कृषक-बुद्धि का परिचय देता है। एक बार जमींदार के यहाँ जाते समय भोला की गाय देखकर उसके हृदय में भी गाय की लालसा उत्पन्न होती है। अपनी मानमर्यादा के लिए उसे गाय रखना आवश्यक प्रतीत होता है। वह भोला

को उसका दूसरा विवाह करा देने और मुफ्त भूसा देने का लोभ दिखाता है। गोबर को साथ लेकर वह भोला के घर भूसा डाल भी आता है।

“इसी अवसर पर गोबर तथा भोला की विधवा लड़की झुनियाँ एक-दूसरे पर मुग्ध हो जाते हैं। शाम को गोबर गाय लेकर पहुंचा तो होरी ने अपने आँगन में बाँध दी। इससे कुछ ही समय पूर्व होरी ने जब सांझे के बाँस बेचने चाहे तो उसके भाई हीरा की पत्नी पुनियाँ ने विरोध किया था। इसीलिए जब गाँव के सभी आदमी गाय देखने आये तो हीरा और पुनिया नहीं आये। एक दिन अवसर पाकर हीरा गाय को जहर दे देता है और घर से भाग जाता है। होरी की पत्नी धनियाँ इस बात पर तूफान मचा देती है।” गाँव के चौकीदार की सूचना के आधार पर पुलिस का थानेदार आकर जब हीरा के घर की तलाशी लेता है, तो होरी कुल की प्रतिष्ठा बनाये रखने की दृष्टि से इस बात का विरोध करता है। होरी कर्ज लेकर थानेदार को रिश्वत तक देने को प्रस्तुत हो जाता है, किन्तु धनियाँ अपना उग्र रूप प्रकट कर होरी को कर्ज लेने और रिश्वत देने से बचाती है। थानेदार सूखा ही वापस लौट जाता है। होरी सब प्रकार के कष्ट सहन करते हुए भी अपनी सज्जनता, सरलता और हृदय की विशालता नहीं छोड़ता। यहाँ तक कि गोबर और झुनिया के गुप्त प्रेम-व्यवहार के कारण वह गाँव वालों के लाँछन भी सहता है। होरी की हालत दिन-पर-दिन खराब होती जाती है।

खलिहानों में जब अनाज तैयार हुआ तो उसे प्रसन्नता हुई, लेकिन झुनियाँ को लेकर जब पंचायत ने उस पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज का जुर्माना किया तो उसकी आर्थिक दशा और भी बिगड़ गयी। इतने पर भी उसने और उसकी पत्नी ने मिजाज की तेज होते हुए भी झुनिया के प्रति अपना मानवोचित कर्तव्य न छोड़ा। उसी दिन रात को झुनिया को लड़का हुआ और होरी ने लाचार होकर कुछ अनाज और अस्सी रुपये पर अपना घर झिंगुरी सिंह के हाथ गिरवी रखकर बिरादरी का जुर्माना अदा किया। गोबर घर छोड़कर लखनऊ शहर में मजदूरी करने लगता है। होरी महाजनों के शिकंजे में पूरी तरह से फँस चुका था। ऐसी दुर्दशा में भी वह अपने भाई की पत्नी पुनिया की सहायता करता रहता है। भोला भी उससे अपने रुपयों के लिए बार-बार तकाजा करता है और एक दिन कुछ गाँव वालों के मना करने पर भी उसके बैल खोल ले जाता है। विवश होकर होरी दातादीन के सांझे में आधी बैटाई पर काम करता है। जब ईख काटी जा रही थी तो झिंगुरी सिंह और गोखेराम उसकी सारी कमाई ले लेते हैं। वह खेतिहर से मजदूर हो जाता है। वह दातादीन का नौकर हो जाता है। साथ में धनिया, सोना और रूपा भी मजदूरी करती हैं। सारा घर आर्थिक विषमता के कारण पिस गया।

एक दिन काम करते-करते होरी को लू लग गयी और वह बीमार पड़ गया। उधर गोबर अचानक आ पहुँचा। वह गाँव में अपना खूब रौब जमाता है और भोला के यहाँ से अपने बैलों की जोड़ी को वापस ले आता है। वह चाहता है कि होरी अपना सिधाई छोड़ दे, जिसके लिए होरी तैयार न था। वह अपना स्वभाव कैसे छोड़ सकता था। अन्त में गोबर, झुनिया और बच्चे को लेकर फिर लखनऊ वापस चला जाता है। वह बात करने में तेज था, परन्तु घर की स्थिति सँभालने में असमर्थ था। होरी अब महाजनों के चंगुल में पूर्णतः फँस चुका था। दुलारी सहुआइन और गोहरी से उधार लेकर सोना का विवाह मथुरा के एक किसान के बेटे से किया। साथ ही गाँव की सिलिया चमाइन को भी घर में आश्रय दिया। लेकिन अब वह ऋण के बोझ से दबा जा रहा है। जीवन के संघर्ष में वह चूर-चूर हो जाता है। गोबर घर वापस आ जाता है और अबकी बार पिता के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हृदय लेकर आता है। होरी मजदूरी करके उदर-पूर्ति करता है। उसके भाई हीरा और शोभा भी लौट आते हैं। होरी उनका सहृदयतापूर्ण स्वागत करता है, किन्तु अब उसमें शक्ति नहीं रही। पुत्र, भाई आदि सब उसके हृदय की विवशता से द्रवीभूत हो चुके थे। भौतिक दृष्टि से भले ही वह पराजित हो गया हो, लेकिन मन में वह प्रसन्न था, उसमें पुलक और गर्व था। उसके टूटे फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएँ थीं। मजदूरी करते हुए उसे एक दिन लू लग गयी, उसकी मृत्यु के दिन समीप आ गये। गाय की लालसा पूर्ण न हो सकी। धनिया की आँखों से आँसू बहने लगे। हीरा ने रोते हुए कहा— “भौजी दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले।” धनिया उस दिन सुतली बेचकर बीस आने लायी थी। पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली प्महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही

इनका गोदान है।

नगर से सम्बन्धित प्रासंगिक कथा के राय साहब अमरपाल सिंह, बिजली पत्र के सम्पादक पण्डित ओंकारनाथ, बीमा कम्पनी के दलाल मि० तनखा, प्रोफेसर मेहता, लेडी डाक्टर मालती, मिल-मालिक खन्ना, उनकी पत्नी गोविन्दी, मिर्जा जी आदि प्रमुख पात्र हैं। रामलीला में धनुष-यज्ञ के अवसर पर सभी एक-दूसरे से परिचित हो जाते हैं और अपने-अपने सामाजिक एवं राजनीतिक विचार प्रकट करते हैं। सभी अपने-अपने वर्ग के अनुसार विचार रखते हैं। मिर्जा जी के कारण इस मित्र-मण्डली का काफी मनोरंजन होता रहता है। अभिनय, शिकार, कबड्डी आदि से इन लोगों को मन-बहलाव के साधन मिल जाते हैं। यद्यपि दोनों के विचारों में बहुत साम्य नहीं है। मालती बाहर से तितली, अन्दर से मधुमक्खी है। प्रारम्भ में मेहता अपने भावुकतापूर्ण आदर्श के कारण उसे ठीकठीक नहीं समझ पाते। खन्ना रसिक व्यक्ति हैं, अपनी पत्नी गोविन्दी से उनकी नहीं पटती और वे रुपये के बल पर मालती के हृदय पर विजय प्राप्त करने में सचेष्ट रहते हैं, किन्तु इस कार्य में उन्हें सफलता नहीं मिलती।

उपन्यास का अन्त अत्यन्त हृदय-द्रावक है। इसमें प्रेमचन्द के जीवन का संचित अनुभव और उनकी कला का निखरा हुआ रूप मिलता है। उन्होंने चारों ओर के जीर्ण-शीर्ण एवं विश्रृंखल होते हुए समाज का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। कानून बदलने या थोड़े से सुधारवादी कार्यों द्वारा इस समाज का त्राण नहीं हो सकता। उनमें तो आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। होरी भी बहुत कुछ इसी समाज की उपज है, किन्तु सामन्तों, पूँजीपतियों, धर्म के ठेकेदारों आदि से वह कहीं—अधिक महान है, क्योंकि इस समाज में इहलोक और परलोक सभी पैसे वालों का है, इसीलिए होरी संघर्ष की चक्की में पिस जाता है। वह समाज को चुनौती देकर संसार से चला जाता है। उसकी चुनौती जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के पीड़ित एवं दलित व्यक्ति की चुनौती है। प्रेमचन्द जी ने इस उपन्यास में जनवाद और सेवा-मार्ग की स्थापना भी की है। उन्होंने अपने समकालीन भारतीय जीवन का गोदान में सुन्दर और विशद चित्रण किया है।

निष्कर्ष

प्रेमचन्द के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष और सामंती व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का चित्रण उनके साहित्यिक दृष्टिकोण की गहराई को दर्शाता है। उन्होंने अपने लेखन में समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं, शोषण और असमानता को सटीक रूप से उकेरा है। कर्मभूमि, गबन, निर्मला और गोदान जैसे उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने न केवल सामाजिक वास्तविकताओं को चित्रित किया, बल्कि समाज में व्याप्त अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध की आवश्यकता को भी बताया। इन उपन्यासों में गांधीवादी विचारधारा, दहेज प्रथा, किसान जीवन के संघर्ष और सामंती व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह को प्रमुखता दी गई है। प्रेमचन्द का लेखन आज भी भारतीय समाज में बदलाव के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो यह सिखाता है कि समाज में सुधार और न्याय के लिए संघर्ष जरूरी है। उनका साहित्य न केवल उनके समय की समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि समकालीन मुद्दों पर भी समाज को सोचने और कार्य करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ

- शुक्ला, र. (2022). प्रेमचंद के काव्य में सामाजिक यथार्थवाद: कर्मभूमि और गोदान का अध्ययन. आधुनिक भारतीय साहित्य पत्रिका, 45(3), 112–127.
- मिश्रा, स. (2021). गबन में प्रेमचंद के द्वारा हाशिये पर जीवन जीने वाले पात्रों का चित्रण. भारतीय साहित्य अध्ययन, 37(2), 201–215.
- यादव, स. (2020). प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष और प्रतिरोध. भारतीय साहित्यिक आलोचना पत्रिका, 39(4), 56–72.
- शर्मा, प. (2019). गोदान में प्रेमचंद के द्वारा जाति और वर्ग संघर्ष का विश्लेषण. सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 28(1), 88–103.
- तिवारी, अ. (2018). प्रेमचंद और सामाजिक परिवर्तन: उनके ग्रामीण यथार्थवाद पर एक अवलोकन. भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 15(1), 42–59.
- पांडे, क. (2018). प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक मान्यताओं की आलोचना. दक्षिण एशियाई अध्ययन पत्रिका,

- 33(2), 110–123.
- श्रीवास्तव, न. (2017). कर्मभूमि में प्रेमचंद द्वारा सामंती व्यवस्था की आलोचना. उपनिवेशोत्तर अध्ययन पत्रिका, 30(2), 130–146.
- कपूर, म. (2017). प्रेमचंद और उनके उपन्यासों में महिलाओं के मुद्दे. नारीवादी साहित्यिक समीक्षा, 42(4), 55–68.
- सिंह, व. (2020). गोदान में प्रेमचंद के आर्थिक संघर्ष और नैतिक दुविधाएँ. भारतीय अर्थशास्त्र समीक्षा, 22(2), 101–115.
- अग्रवाल, र. (2019). प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक आलोचना: जाति और वर्ग पर एक दृष्टिकोण. दक्षिण एशियाई साहित्यिक आलोचना, 25(1), 40–56.